अध्याय–6

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के नियंत्रणाधीन आठ संस्थानों में से एक है। संस्थान का उद्देश्य राजस्थान, गुजरात और दादर एवं नगर हवेली के उष्ण शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों में जैवविविधता का संरक्षण, वनस्पति आवरण बढ़ाने तथा जैव उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए प्रौद्योगिकियां उपलब्ध कराने हेतु वैज्ञानिक वानिकी अनुसंधान करना है।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : राजस्थान के शुष्क और अर्ध शुष्क क्षेत्रों में सतत् उत्पादन के लिए कृषि वानिकी अनुसंधान [ए.एफ.आर.आई.–2/एफ.ई.डी.डी.–2/1999–2003]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. जी. सिंह

उपलब्धियां:

प्रयोग 1: कृषि वानिकी प्रणालियों में फसल उत्पादन और पादप वृद्धि पर वृक्ष घनत्व का प्रभाव।

9–12 साल की वृक्ष आयु पर प्रति हैक्टेयर अनुकूलतम घनत्व 208 वृक्ष थी। प्रोसोपिस सिनरेरिया का फल उत्पादन 7 और 8 साल की आयु में प्रति वृक्ष 350–1040 कि.ग्रा. तक था। 12 साल की आयु मे प्रति हैक्टेयर 0.85 टन पत्ती चारे सहित उपयोजनीय जैवमात्रा प्रति हैक्टेयर 19.96 टन थी। अतः, पी. सिनरेरिया और टेकोमेला अन्डुलाटा को कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण कमी किए बिना 12 साल की आयु तक प्रति हैक्टेयर 208 वृक्ष पर उगाया जा सकता है।

प्रयोग 2: कृषि वानिकी प्रणालियों में उत्पादन और उत्पादकता पर विभिन्न बीच की फसलों के प्रभाव।

पी. सिनरेरिया को टी. अन्डुलाटा की अपेक्षा कम प्रतियोगी पाया गया क्योंकि इसका उत्पादन कृषि फसलों से 7–15 प्रतिशत कम है। तथापि, कृषि में क्षति को मूल्यों भोगाधिकार द्वारा पूरा होता है, यदि कृषक टी. अन्डुलाटा को शामिल कर लें। बाजरा को मूंगबीन की अपेक्षा वृक्ष के साथ ज्यादा प्रतियोगी पाया गया जैसा वृक्ष संवृद्धि में कमी द्वारा देखा

(क)

(ख)

वर्ष 2003 में बीच की फसल के रूप में विग्ना रेडियाटा के विभिन्न वृक्ष घनत्व पर (क) पी. सिनरेरिया (ख) टी. अन्डुलाटा के स्टैण्ड

गया। पी. सिनरेरिया के साथ की अपेक्षा पत्ती के उत्पादन के सन्दर्भ में टी. अन्डुलाटा के साथ केसिया अंगूस्टिफोलिया का संबंध बेहतर था। 8 साल की आयु में पी. सिनरेरिया के लिए उपयोजनीय जैवमात्रा का उत्पादन प्रति हैक्टेयर 21–32 टन और टी. अन्डुलाटा के लिए प्रति हैक्टेयर 17–30 टन था।

प्रयोग 3 : शुष्क क्षेत्र में कृषि वानिकी में खाद्य, चारा और फल उत्पादन अधिकतम करना।

कॉलफोस्परमम मोपेनी ने 7–8 साल की आयु में प्रति वृक्ष प्रति वर्ष 3.0–4.0 कि.ग्रा. शुष्क चारा/ईंधन से काष्ठ का उत्पादन किया जबकि 59 साल की आयु में 0.5 से 1.25 कि.ग्रा./वृक्ष फल उत्पादन किया। जब बाजरा (पीन्निसीटम ग्लूकम) अथवा ग्वार (सीमोप्सिस टेट्रागोनोलोबा) के बीच की फसल थी तब फल उत्पादन कम था। हार्डविकिया बिन्नाटा और एम्बिलिका आफिसिनेलिस की तुलना में सी. मोपेनी ज्यादा मृदा जल खींचती है। एच. बिन्नाटा से कृष्ट जैवमात्रा थोड़ा कम थी।

नियंत्रण भूखण्डों की तुलना में (56 प्रतिशत) कृषि वानिकी भूखण्डों में एस.ओ.सी. (3.2 से 3.5 प्रतिशत) में मृदा अवस्थाओं ने निम्न क्षति दिखाई, जो कार्बन पृथक्करण के संदर्भ में वृक्ष एकीकरण के लाभों को दर्शाता है। कृषि फसलों के साथ इसके एकीकरण की अपेक्षा निम्नीकरण भूमियों के सुधार के लिए ब्लॉक रोपण में सी. मोपेनी को ज्यादा उपयुक्त पाया गया।

एच. बिन्नाटा और सी. मोपेनी गहरी वेधन जड़ प्रणालियों के साथ शुष्क जलवायु के लिए कठोर हैं किन्तु सी. मोपेनी को स्थल तैयार करके और बेहतर उत्तरजीविता के साथ सीधे बीजायन द्वारा उगाया जा सकता है। अच्छे वर्षा वर्ष की अपेक्षा शुष्क अवधि के दौरान वृक्ष के सरलीकरण प्रभाव ज्यादा थे।

(क)

(ख)

2003 शस्योत्पादन मौसम में (क) हाईविकिया बिनाटा के साथ विग्ना रेडिआटा और (ख) कॉलफोस्परमम मोपेनी

परियोजना 2 : जोधपुर जिले में महिलाओं एवं बच्चों के जीवन की गुणवत्ता सुधारने के लिए व्यापक समुदाय सूखा तैयारी कार्यक्रम [ए.एफ.आर.आई.–27/सिल्वि–3/यूनिसेफ/ 2001–2003]

प्रधान अन्वेषक–श्री एच.सी. चौधरी

उपलब्धियां : जोधपुर जिले में स्थित ओरन, गौचर, परात और अगोर आदि कहे जाने वाले सभी 3,278 सामुदायिक वनों और गाँव पोखरों का व्यापक सर्वेक्षण पूरा किया गया। "राजस्थान में ओरन और गौचरों के सुधार के लिए उपयुक्त रणनीति का विकास" पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में जोधपुर में विभिन्न विकास विभागों, अनुसंधान संस्थानों और गैर सरकारी संगठनों के अधिकारियों ने व्याख्यान दिया। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान कार्मिकों, गैर सरकारी संगठनों और

क्लस्टर समन्वयकों के लिए पी.एल.ए. और सूक्ष्म–योजना पर एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। 5 गाँवों प्रत्येक के तीन क्लस्टरों में स्थित 15 गांवों के लिए सूक्ष्म योजनाएं स्थानीय जिला प्रशासन के साथ परामर्श करके तैयार की गई जिसे निधीयन के लिए यूनिसेफ को प्रस्तुत किया गया। डी.आर.डी.ए., जिसने 2003–2004 से पश्चिमी राजस्थान में रूपये 100 करोड़ के परिव्यय के साथ 'मरू गौचर परियोजना' की शुरूआत की, के साथ सहयोग से जोधपुर जिले में स्थित सामुदायिक वनों के सुधार पर एक विशेष परियोजना के सूत्रीकरण में सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित आंकडों का उपयोग किया गया।

परियोजना 3 : शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्र में वन पौधशालाओं ने नाशीजीव समस्याओं और उनके प्रबंध पर अध्ययन [ए.एफ.आर.आई.–12/ एफ.पी.–2/ 1993–2003]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. सीमा कुमार

उपलब्धियां : विभिन्न वन पौधशालाओं में जांच की गई 53 वृक्ष प्रजातियों में से केवल 19 वृक्ष प्रजातियों ने नाशिकीट उत्पीड़न का प्रदर्शन किया। महत्वपूर्ण सक्षम कीट पौधशाला नाशीजीव माइक्रोटर्मिस प्रजाति को प्रारम्भ में बाल वृक्षों को क्षति पहुंचाते हुए पाया गया किन्तु बाद में मृत और क्षय पदार्थ को गलाकर उससे मृदा पोषकों को बढाने मे लाभकारी सिद्ध हुए।

मोलस्क, सूत्रकृमि, चिंचड़ी और कृत्तकों जैसे सूचित गैर–नाशिकीट भी अभिलिखित किए।

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1: जलाक्रान्त क्षेत्रों के सुधार में वृक्षों की भूमिका और मृदा पर इनके प्रभाव पर अध्ययन [ए.एफ.आर.आई.–29/एफ.इ.डी.डी.–6/2002– 2006]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एन. बाला

स्थिति :

प्रयोग 1 : विभिन्न प्रजातियों की वास्पोत्सर्जन क्षमताओं और विभिन्न आयु में मृदा पर प्रभाव।

राज्य वन विभाग द्वारा उगाए रोपणों में आठ प्रायोगिक भूखण्ड चिह्नित किए गए। वृक्ष ऊंचाई और वृक्षोच्चता व्यास अभिलिखित किया। मृदा नमूने एकत्र किए। मृदा नमूनों का विश्लेषण प्रगति पर है।

परियोजना 2 : शुष्क क्षेत्र प्रजाति पर उद्गमस्थल परीक्षण [ए.एफ.आर.आई.– 16/ एफ.जी.टी.बी.–3/ 1992–2005]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सी.जे.एस.के. इमैनुअल

स्थितिः नीम– सम्पूर्ण भारत से 39 बीज स्रोतों के साथ ऐजैडिरैक्टा इंडिका के उद्गमस्थल परीक्षण 1992 में तैयार किए। वनस्पति आकारिकी पर किए गए अध्ययनों ने दर्शाया कि पुष्पण लम्बाई और प्रति पुष्पण फूलों की संख्या के सन्दर्भ में पलानपुर उद्गमस्थलों ने अन्य की अपेक्षा बेहतर किया। तेल मात्रा, ऐजैडिरैक्टिन मात्रा और घेरे के सन्दर्भ में भी अन्य की अपेक्षा पलानपुर उद्गमस्थल ने बेहतर किया। उँचाई के मामलें में, रीवा (मध्य प्रदेश) उद्गमस्थल (6.62 मीटर) उच्चतम था और पलानपुर रनर्सअप (6.27 मीटर) रहा।

नीम का राष्ट्रीय उद्गमस्थल परीक्षण

रोहिड़ा– राजस्थान से 134 बीज स्रोतों के साथ वर्ष 1992 में टेकोमेला अन्डुलाटा के उद्गमस्थल परीक्षण आयोजित किया गया। यद्यपि राज्य अत्यधिक सूखे का सामना कर रहा है किन्तु इस परीक्षण में कोई मर्त्यता नहीं देखी गई। यह दर्शाता है कि रोहिड़ा सूखे की अवस्था में भी अपने को अनुकूल बना लेता है।

एकत्रित वृद्धि आँकड़ों ने दर्शाया कि 3.81 मी. को ऊंचाई के साथ सुन्दरपुर बिर (सिकर) उदगमस्थल वृद्धि में उत्कृष्ट है।

टेकोमेला अन्डुलाटा का उद्गमस्थल परीक्षण

शीशम– वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा 1994 में भेजे बीजों से अगस्त, 1995 में डैल्बर्जिया सिस्सू के लिए उद्गमस्थल परीक्षण तैयार किया गया। इस साल सर्वोत्तम प्रदर्शन इटावा उद्गमस्थल (8.07 मी.) में ऊंचाई के लिए अभिलिखित किया गया, इसके बाद पीलीभीत उद्गमस्थल (7.81 मी.), इलाहाबाद उद्गमस्थल (7.35 मी.), प्रतापगढ़ उद्गमस्थल (6.14 मी.), कासगंज उद्गमस्थल (6.13 मी.) और आगरा उद्गमस्थल निम्नतम् (4.00 मी.) रहा। घेरे के मामलें में पीलीभीत उद्गमस्थल ने सर्वोत्तम परिणाम (77.00 से.मी.) दिया। इसके बाद ललितपुर उद्गमस्थल (46.99 से.मी.), इलाहाबाद उद्गमस्थल (45.30 सेमी), प्रतापगढ़ उद्गमस्थल (45.00 से.मी.) और निम्नतम आगरा उद्गमस्थल (30.25 से.मी.) रहा।

परियोजना 3: अन्तर्राष्ट्रीय नीम नेटवर्क उद्गमस्थल परीक्षण [ए.एफ.आर.आई.–17 / एफ.जी.टी.बी.–2 / 1995–2005]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सी.जे.एस.के. इमैनुअल

स्थिति : नीम पर अन्तर्राष्ट्रीय उद्गमस्थल परीक्षण एफ.ए.ओ. नीम नेटवर्क द्वारा शुरू किया गया था और 1995 के दौरान सहभागी देशों के बीच बीजों का विनिमय किया गया। नियत्रंण सहित 18 उद्गमस्थलों के साथ जोधपुर, जयपुर, पलानपुर, जबलपुर और कोयम्बटूर में जुलाई और अगस्त 1996 के दौरान क्षेत्र परीक्षण तैयार किए गए। वर्तमान में परीक्षण केवल जोधपुर, जयपुर और कोयम्बटूर में ही जारी है। अन्तर्राष्ट्रीय नीम उद्गमस्थल परीक्षण का प्रदर्शन जोधपुर में अच्छा है।

परियोजना 4: ऐकेशिया निलोटिका और एलन्थस एक्सल्सा पर उद्गमस्थल परीक्षण [ए.एफ.आर.आई.–18 / एफ.जी.टी.बी.– 3 / डब्ल्यू.बी. / 1995–2005]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. सी.जे.एस.के. इमैनुअल

स्थिति : ऐकेशिया निलोटिका– भारत के प्रमुख राज्यों से एकत्रित 28 उद्गमस्थल के साथ 1992 में उद्गमस्थल परीक्षण तैयार किया गया। इनमें से ऊँचाई साथ ही साथ घेरे के संदर्भ में अन्य दो की अपेक्षा पार्लेखमुंडी उद्गमस्थल ने बेहरत प्रदर्शन किया।

एलन्थस एक्सल्सा– 13 विभिन्न बीज स्रोतों से एकत्रित बीजों से उद्गमस्थल परीक्षण तैयार किए, पौधशाला में उगाए गए बीजों से रोपणीय तैयार किए, पौधशाला में उगाए गए बीजों से रोपणीय पौधे के 8 उद्गमस्थलों से प्राप्त किए जा सके। जयपुर और जोधपुर में दो विभिन्न स्थलों में उद्गमस्थल परीक्षण तैयार किया गया। यह परीक्षण राज्य में जारी दीर्घ सूखा और निम्न आर्द्रता अवस्थाओं द्वारा भी प्रभावित हुआ। एकत्रित आँकड़े दर्शाते हैं कि नियंत्रित जयपुर उद्गमस्थल सर्वोत्तम (5.55 मी.) था, इसके बाद सोनभद्र उद्गमस्थल (5.16 मी.) रहा।

परियोजना 5: यूकेलिप्टस और डैल्बर्जिया क्लोनों के बहुस्थानिक परीक्षण [ए.एफ.आर.आई.– 31 / एफ.जी.टी.बी.–7 / 2002–2006]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. यू.के. तोमर

स्थिति : गुजरात राज्य में चार अलग–अलग स्थानों, यथा– दीसा, खीरालू, गाँधीनगर, राजपिपला में अगस्त 2003 में यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस और डैल्बर्जिया सिस्सू के बहुस्थानिक क्लोनीय परीक्षण स्थापित किए गए। विश्व बैंक परियोजना तथा अन्य स्रोतों के तहत चयनित ये क्लोन उत्कृष्ट जननद्रव्य हैं।

अनुसंधान स्टेशन गाँधी नगर

अनुसंधान स्टेशन दीसा

परियोजना 6: शुष्क तथा अर्ध शुष्क क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण औषधीय पादप–कोमिफोरा का सूक्ष्म प्रवर्धन [ए.एफ.आर.आई.–32 / एफ.जी.टी.बी.–8 / 2002–2005]

प्रधान अन्वेषक्र–डॉ. तरूण कान्त

स्थिति : कोमिफोरा विघटी का पात्र में बहुमात्र गुणन के उद्देश्य से दो तरीकों को शामिल करके प्रयोग चल रहे हैं।

परियोजना 7: टेकोमेला अण्डुलाटा का आनुवंशिक सुधार [ए.एफ.आर.आई.–17 / एफ.जी.टी.बी.– 9 / 2000–2006]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सी.जे.एस.के. इमैनुअल

स्थिति : विभिन्न क्षेत्रों में कैन्डिडेट धन वृक्षों की उपलब्धता के लिए सर्वेक्षण किए गए। 1987 में उगाए रोपणों से आई.जी.एन.पी. नहर क्षेत्र के सींचित भूभाग में 30 कैन्डिडेट धन वृक्षों और किसानों के खेतों में गैर–सींचित क्षेत्रों मे 35 कैन्डिडेट धन वृक्षों का चयन किया गया।

टेकोमेला अन्डुलाटा के कैन्डिडेट धन वृक्ष

परियोजना 8: नीम में उच्च तेल और ऐजेडिरैक्टिन की जांच [ए.एफ.आर.आई.–34 / एफ.जी.टी.बी.–10 / 2002–2005]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सी.जे.एस.के. इमैनुअल

स्थिति : नीम के उच्च तेल और ऐजेडिरैक्टिन (Az) उत्पादक कैन्डिडेट धन वृक्ष (32 कैन्डिडेट धन वृक्ष) के क्लोनीय पदार्थ लगाए गए और आगामी मानसून मौसम में क्षेत्र परीक्षण तैयार करने के लिए तैयार हैं। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में गरम और सर्द मौसमों में पुष्पण वाले कैन्डिडेट धन वृक्षों के बारह हैक्टेयर सन्तति परीक्षणों और गोविन्दपुरा जयपुर में उच्च ऐजेडिरैक्टिन और उच्च तेल कैन्डिडेट धन वृक्षों को पोषित किया जा रहा है। उच्च ऐजेडिरैक्टिन और उच्च तेल कैन्डिडेट धन वृक्षों की सन्ततियों के वृद्धि पैरामीटरों पर आँकड़े अभिलिखित किए गए।

परियोजना 9: प्रोसोपिस सिनरेरिया के मर्त्यता कारकों की पहचान और उपयुक्त प्रबंध रणनीतियों का विकास [ए.एफ.आर.आई.–26 / एफ.पी–3 / 2001–2005]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एस.आई. अहमद

स्थिति : कीट विज्ञानीय प्रेक्षण और उपलब्धियां–उत्तर–पश्चिम राजस्थान में खिजरी मर्त्यता पर गहन सर्वेक्षण शुरू किया गया और जनवरी, 2003 के दौरान विभिन्न जैव और अजैव पहलुओं पर प्रेक्षण लेने का कार्य शुरू किया गया।

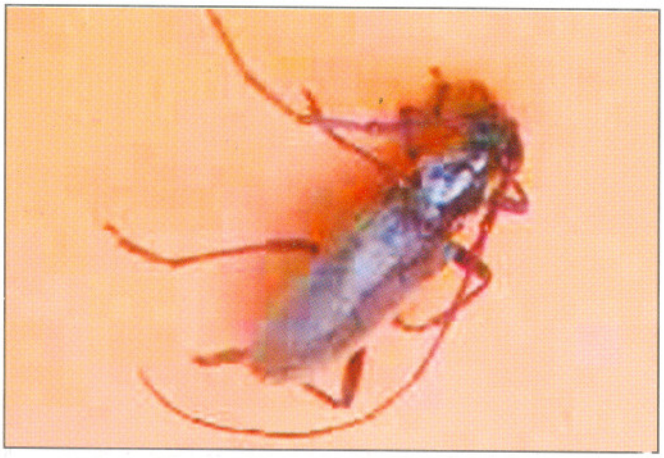

डीरोलस इरेनेन्सिस – खिजरी प्ररोह छेदक

राजस्थान के चार उत्तर–पश्चिम जिलों, यथा– नागौर, सिकर, झूंझूनू और चुरू, में खिजरी मर्त्यता की अधिकतम प्रतिशतता क्रमशः 36.52, 38.87, 42.78 और 26.08 के रूप में अभिलिखित की गई। मर्त्यता के कारकों का पता लगाने के लिए आँकड़ों का विश्लेषण प्रगति पर है।

हाइपोइस्करस इन्डिकस गेहन, खिजरी प्ररोह छेदक

खिजरी जड़ और प्ररोह छेदक, एलीस्थीस होलोसीरिसीया फैव

क्षेत्र प्रायोगिक परीक्षण– संक्रमित खिजरी वृक्षों के प्रबन्ध के लिए विभिन्न उपचारों की सापेक्ष क्षमता की जांच करने के लिए जनवरी, 2004 के दौरान सिकर जिले में बासुवा में खिजरी मर्त्यता के प्रबंध के लिए एक क्षेत्र प्रायोगिक परीक्षण तैयार किया गया। प्रयोगशाला में रोगग्रस्त नमूनों का विश्लेषण किया गया और कॉलीस्ट्रोट्राइकम प्रजाति को पृथक कर पहचान की गई।

खिजरी जड़ और प्ररोह तंत्र का उत्पीड़न करने वाले एकेन्थोफोरस सीरेटिकॉर्निस के छेदक लार्वा

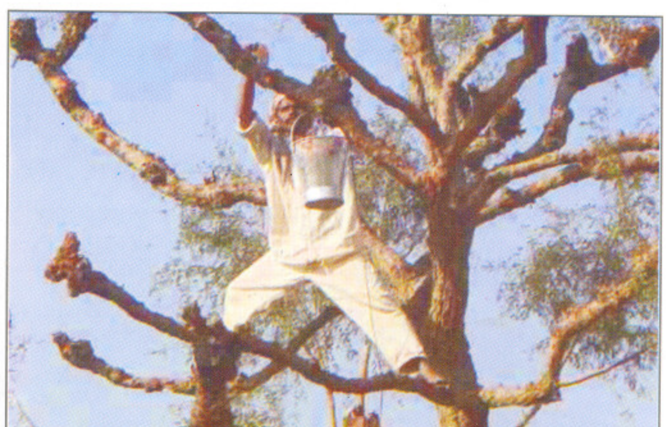

ए.एफ.आर.आई पेस्ट के साथ संक्रमित खिजरी वृक्ष का प्ररोह उपचार

बासुवा (सिकर) में संक्रमित खिजरी वृक्ष का जड़ उपचार

राजस्थान में खिजरी मर्त्यता पर जैव और अजैव दबावों के प्रभाव पर अध्ययन करने के लिए अध्ययन शुरू किए गए और प्रगति पर हैं। (i) डीरोलस इरेनेन्सिस (=डेसिकोलिस) के विशेष सन्दर्भ में सक्षम कीट छेदको की जीव पारिस्थितिकी पर अध्ययन। (ii) रोगविज्ञानीय प्रेक्षण और उपलब्धियां : सेलेसर तहसील, सिकर जिला में अविक्षुब्ध भूमि यथा– ओरन और गौचर भूमियों में उगे वृक्षों की तुलना में कृषि वानिकी में खिजरी वृक्षों में मर्त्यता का उच्च प्रभाव देखा गया। ट्रेक्टर के साथ (आधुनिक कृषि पद्धतियां अपनाकर) गहरी जुताई के फलस्वरूप पार्श्विक जड़ों को चोट पहुंचाती है और बाद में फ्यूजेरियम प्रजाति, राइजोक्टोनिया सोलानी जैसे मृदा जनित रोगजनकों द्वारा आक्रमण होता है और जड़ छेदक सिकर में खिजरी मर्त्यता के सम्भावित रोगकारक हैं। खिजरी को प्रभावित करने वाली एक नई प्रजाति के रूप में कॉलीस्ट्रोट्राइकम प्रजाति को देखा गया। पाई गई अन्य प्रजातियां हैं:– एस्परजिलस फ्लेवस, ए. नाइगर, ए. निवीयस, ए. औक्रइनस, म्यूकोर प्रजाति और फोमस प्रजाति आदि।

परियोजना 10: वी.ए.एम./जैव उर्वरकों द्वारा प्रोसोपिस सिनरेरिया की वृक्ष उत्पादकता सुधारने पर अध्ययन [ए.एफ.आर.आई.–36/सिल्वि.–8/2002–2006]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. के.के. श्रीवास्तव

स्थिति : वी.ए.एम. आबादी अध्ययन दर्शाते हैं कि सिकर में पी. सिनरेरिया के कृषि वानिकी रोपणों से पूवर्ध्यों की अधिकतम संख्या और चूरू में न्यूनतम संख्या में पृथक किया गया।

जीवाण्विक जैव उर्वरकों और वी.ए.एम. के विभिन्न संयोजनों और तीन प्रतिकृतियों के साथ आठ उपचारों के साथ पूरी तरह यादृच्छिकीकृत अभिकल्प में पी.सिनरेरिया उर्वरक पर पौधशाला प्रयोग तैयार किए। कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 11: शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों को विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के संबंध में बीज गुणवत्ता सुधार पर अध्ययन [ए.एफ.आर.आई.–35/सिल.–7/2002–2007]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. डी.के. मिश्रा

स्थिति : शारीरिक रूप से परिपक्व, हरे, हरे से पीले और पीले फलों से नीम बीजों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंकुरण दर्शाया। तथापि, भण्डारण में पीले हरे फलों से बीजों ने बेहतर प्रदर्शन किया।

कैपेरिस डेसिडुआ के बीज सम्भवतः शारीरिक कारणों से अत्यधिक प्रसुप्त पाए गए। अनुपचारित बीजों ने 10 प्रतिशत से कम अंकुरण दर्शाया जबकि खरोंचे गए बीजों ने 70 प्रतिशत से अधिक अंकुरण दिया। गरमी में एकत्रित बीजों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंकुरण क्षमता दिखाई जबकि सर्द मौसम में एकत्रित बीजों ने केवल 40 प्रतिशत अंकुरण क्षमता दी।

परियोजना 12: विभिन्न प्रबंध परियोजना के साथ लवण प्रभावित मृदा पर विदेशज और देशज पादप प्रजातियों की उनके प्रदर्शन के लिए जांच [ए.एफ.आर.आई.–6/एफ.आर.एम.ई.– 4/1997–2003]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. रंजना आर्या

स्थिति : विभिन्न वर्षों (1997 से 2003 तक) में तैयार किए गए जोधपुर जिले में गंगानी के लवण प्रभावित क्षेत्र में कुल आठ प्रायोगिक परीक्षण विद्यमान हैं। इन प्रयोगों में से 1 और 4 इस साल पूरे हो गए हैं।

प्रयोग 1– जीप्सम के तीन स्तरों : नियंत्रण (जी$_0$), 100 प्रतिशत मृदा जी.आर. (जी$_1$) के दर पर जीप्सम; और 150 प्रतिशत मृदा जी.आर. (जी$_2$) की दर पर जीप्सम और छः नाइट्रोजन स्तरों : 0 (एन$_0$), 20(एन$_1$), 40 (एन$_2$), 60 (एन$_3$), 80 (एन$_4$), यूरिया का 100 (एन$_5$) जी; 18 उपचार संयोजनों को मिलाकर, 1997 में एट्रिप्लेक्स लेन्टिफॉर्मिस पर परीक्षण तैयार किया गया था। यह परीक्षण अगस्त, 03 में समाप्त हुआ। जी$_0$ और जी$_1$ स्तरों की तुलना में जी$_2$ उपचारित झाड़ियों ने 11 प्रतिशत अधिक उत्तरजीविता अभिलिखित की। सामान्यतः जी$_1$ और एन$_4$ संयोजन ने उच्च जैवमात्रा अभिलिखित की है।

प्रयोग 4– जीप्सम के तीन स्तरों : नियंत्रण (जी$_0$), आधा जीप्सम आवश्यकता (जी$_1$) और पूर्ण जीप्सम आवश्यकता (जी$_2$) के साथ दोहरे डौल टीले पर अगस्त, 1999 में ऐकेशिया लेन्टिफॉर्मिस का परीक्षण लगाया गया। दो नाइट्रोजन स्रोतों, यूरिया और कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट से नाइट्रोजन 9, 18, 27 ग्रा. की तीन मात्राओं को अगस्त, 2000 में प्रयुक्त किया गया। दोहरे डौल टीले पर ए. लेन्टिफॉर्मिस की उत्तरजीविता अगस्त, 2003 में विभिन्न उपचारों में 22 प्रतिशत से 78 प्रतिशत तक थी। विभिन्नता के विश्लेषण ने दर्शाया कि उत्तरजीविता पर न तो जीप्सम मात्राओं अथवा ना ही नाइट्रोजन उपयोग का कोई प्रभाव है। सामान्य वर्षा के कारण लवण सहनशील घासें मुख्यतः स्पोरोबोलस प्रजाति, क्लोरिस विरगाटा और डेक्टीलोक्टीनियम प्रजातियां प्रधान थी। प्रायोगिक क्षेत्र से औसत 284.6 gm^{-2} शुष्क जैवमात्रा उपलब्ध थी। परीक्षण अगस्त, 2003 में समाप्त हो गया है। किन्तु बीज स्रोत के रूप में झाड़ियों को पोषित किया जा रहा है।

परियोजना 13: सही फसल समय का पता लगाने के लिए कुछ शुष्क क्षेत्र औषधीय पादपों में जैविकीय रूप से सक्रिय द्वितीयक उपापचयजों का मात्रात्मक आंकलन [ए.एफ.आर.आई.– 15 / एन.डब्ल्यू.एफ.पी.–4 / 2002–2005]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. माला राठौड़

स्थिति : साहित्य और क्षेत्र सर्वेक्षण के आधार पर अध्ययन के लिए दो प्रजातियों, केलोट्रोपिस प्रोसेरा और बोइरहेविया डिफ्यूजा का चयन किया गया। इन प्रजातियों के फूलों और जड़ों पर कार्य करने का प्रस्ताव किया गया। इन सारों की प्रारम्भिक जांच ने स्टीरॉयड की उपस्थिति और लेवोनॉयड की अनुपस्थिति को दर्शाया। आगे जांच का काम प्रगति पर है।

परियोजना 14: प्रशिक्षण और प्रदर्शन द्वारा वानिकी पर प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण [ए.एफ.आर.आई.– 38 / एस.एफ.–1 / 2002–2006]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एस. मोहन

स्थिति : एक विस्तार और निर्वचन केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। संस्थान के कार्यकलापों को दर्शाते हुए प्रदर्शन बोर्डों, बैकलाइट प्रिन्टिंग बोर्डों मीटेलिक मोडनें वाला फोटो एल्बम और स्तरित फोटोग्राफों को लगाने और सिविल कार्य पूरा किया गया।

परियोजना 15: गुजरात और राजस्थान में सतत् संयुक्त वन प्रबंध के लिए उपयुक्त रणनीतियों एवं मुख्य निर्देशकों की पहचान [ए.एफ.आर.आई.–39 / जे.एफ.एम.–1 / 2002–2006]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. सुनील कुमार

स्थिति : सामाजिक–आर्थिक स्तर और संयुक्त वन प्रबंध के वर्तमान स्तर के लिए विस्तृत प्रश्नावली तैयार की गई। कई गाँवों से 39 संयुक्त वन प्रबंध समितियों (28 राजस्थान और 11 गुजरात) को कवर करके नमूना सर्वेक्षण पूरा किया गया। समिति सदस्यों और ग्रामीणों से साक्षात्कार किया और संयुक्त वन प्रबंध समितियों के संबंध में सूचना एकत्र की गई।

परियोजना 16: शुष्क तथा अर्ध–शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त चयनित प्रजातियों के संबंध में पौधशाला पद्धतियों का मानकीकरण [ए.एफ.आर.आई.–33 / सिल्वि–5 / डी.आर.डी.ए. / 2002–2006]

प्रधान अन्वेषक– श्री एच.सी. चौधरी

स्थिति : संसद–सदस्य की स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के तहत डी.आर.डी.ए., जोधपुर से निधीयन पर करीब 40,000 उत्कृष्ट गुणवत्ता पौधे उगाए और विभिन्न सरकारी विभागों,

किसानों, गैर सरकारी संगठनों में बांटे गए। विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए ऑक्सफोम इंडिया ट्रस्ट प्रायोजित पौधशाला प्रौद्योगिकी पर दो दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। वर्ष के दौरान विभिन्न प्रायोगिक परीक्षणों को करने के लिए विभिन्न अनुसंधान प्रभागों द्वारा वांछित रोपण स्टॉक सफलतापूर्वक उगाकर आपूर्ति की गई। वर्ष के दौरान पौधशाला में आने वाले भा.व.से. और रा.व.से. परिवीक्षार्थियों, किसानों, प्रशिक्षु फॉरेस्ट रेंजरों/फॉरेस्टरों/फॉरेस्ट गार्डों, विभिन्न जलसंभर विकास समितियों के सदस्यों को शुष्क तथा अर्ध- शुष्क क्षेत्र में रोपण स्टॉक लगाने के लिए उपयुक्त पौधशाला प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई।

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1: शुष्क क्षेत्र की कुछ उपयुक्त नाइट्रोजन स्थायीकर प्रजातियों की, मृदा उर्वरता एवं जैवमात्रा के सुधार में इनके उपयोग के लिए, पहचान और जांच [ए.एफ.आर.आई.– 41/एफ.ई.डी.डी.–6/2003–2007]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एस.पी. चौकियाल

स्थिति : मृदा एन्जाइमों और मृदा पोषकों के आकलन के लिए एलीसिकार्पस लांगिफोलियस, क्रोटेलेरिया बरहिया, सी. मीटिकेजिनीया, इंडिगोफेरा यून्जीन्टीया, आई. लिनेई, आई. सीसिलिफ्लोरा, क्लिटोरिया टर्नेरीया, म्यूकूना प्रूरिएन्स, मिमोसा हमाटा और रींकोसिया मिनिमा का चयन किया गया। नियंत्रण की अपेक्षा इन प्रजातियों के जड़ क्षेत्र के पास एन्जाइम सक्रियता उल्लेखनीय रूप से उच्च थी। बुआई और आगे मूल्यांकन करने के लिए ए. लांगिफोलियस, सी. बरहिया, आई. यून्जीन्टीया, आई. सीसिलिफ्लोरा, सी. टर्नेरीया, एम. प्रूरिएन्स, एम. हमाटा और आर. मिनिमा के बीज एकत्र किए। अन्य पोषक के लिए एकत्रित मृदा नमूनों का विश्लेषण प्रगति पर है।

परियोजना 2: डैल्बर्जिया सिस्सू और ऐकेशिया निलोटिका के विभिन्न समरूपों की, लवणता और सोडीयता के प्रति इनकी सहनशीलता के लिए, जांच [ए.एफ.आर.आई.–42/ एफ.ई.डी.डी.–7/2003–2007]

प्रधान अन्वेषक– डॉ. प्रमोद कुमार

स्थिति : बनासकंठा वन प्रभाग, गुजरात के थराड़ रेंज में प्रयोग के लिए स्थल चयन किया गया। लवण प्रमाणित क्षेत्रों के लिए ऐकेशिया निलोटिका और डैल्बर्जिया सिस्सू के धन वृक्षों की पहचान की गई। डैल्बर्जिया सिस्सू के बीज प्राप्त किए और पौधों को लगाने का कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 3: राजस्थान और गुजरात राज्यों में चन्दन आबादी का सर्वेक्षण और अन्तःकाष्ठ मात्रा एवं तेल मात्रा का मूल्यांकन [ए.एफ.आर.आई.–44/एन.डब्ल्यू.एफ.पी.–6/2003–2007]

प्रधान अन्वेषक–श्री एस.एच. जैन

स्थिति : उदयपुर, राजसमुंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, सिरोही, बांसवाड़ा, डुंगरपुर, झालवा, अजमेर, जयपुर और करोली वन प्रभागों में चन्दन आबादी के लिए सर्वेक्षण किया गया। यह पाया गया कि चन्दन आबादी खत्म हो रही है। किन्तु कुछ स्टैण्ड अभी भी हैं। नाथडबारा रेंज के हल्दीघाटी वन और प्रतापगढ़ रेंज में भवारमथा ब्लॉक में चन्दन की अच्छी आबादी पाई गई। अन्तःकाष्ठ की तेल मात्रा अलग–अलग वृक्षों में अलग–अलग थी और पुराने वृक्षों में उच्च है। राजस्थान के वृक्षों में तेल मात्रा 0.9 से 3.0 प्रतिशत के बीच थी।

परियोजना 4: आई.जी.एन.पी. कमांड क्षेत्र में उपयुक्त बहु–श्रेणी फार्म वानिकी मॉडलों का विकास [ए.एफ.आर.आई.–40/एस.एफ.–2/2003–2007]

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एस. मोहन

स्थिति : चार उपलब्ध स्थलों में भ्रमण के बाद 155 आर.डी. चरन वाला ब्रान्च में सर्वोत्तम उपयुक्त स्थल को अन्तिम रूप दिया गया। यह वन भूमि है और परियोजना को करने के लिए प्रमुख वन संरक्षक (आई.जी.एन.पी.), बीकानेर द्वारा स्थल का

अस्थायी आवंटन किया गया है। प्रारम्भिक मृदा नमूनों का संग्रहण एवं विश्लेषण, औषधीय पादपों और अन्य प्रजाति की पौधशाला तैयार करना जैसे कार्यकलाप शुरू किए गए।

वर्ष 2003–2004 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

वर्ष 2003–2004 के दौरान जारी परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1: राजस्थान के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त मरू गौचर परियोजना हेतु वन संवर्धन–चारागाह मॉडल का विकास [ए.एफ.आर.आई.–45 / एम.जी.पी. / 2003–2006]

प्रधान अन्वेषक– श्री एच.सी. चौधरी

स्थिति : तुलेसर चारण और ओस्त्रा में संबंधित ग्राम पंचायत के साथ दो स्थलों (प्रत्येक का 16 हैक्टेयर क्षेत्रफल) में ओरन्स और गौचरों के वन संवर्धन–चरागाही पुनर्वास विकसित किए जा रहे हैं।

उच्च गुणवत्ता चारे का उत्पादन करने वाली झाडियों और वृक्षों के साथ घासों के रोपण क्षेत्र में चारा उत्पादकता बढ़ाएंगें और अभाव के समय चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करेगें। मॉडलों में रोपित घास, झाड़ी और वृक्ष निम्नवत् हैं।

घास : सीवान (लेजिरस सिन्डिकस), धामन (सींक्रस सिलिएरिस), अंजन (सी. सीटिजीरस) और भूरत (सी. बाइफ्लोरस)।

झाडियां : बार बोर (जीजीफस मार्शियाना) और झरबेरी (जेड़ नूमूलेरिया)।

वृक्ष : खिजरी (प्रोसेपिस सिनरेरिया), मोपने (कोलोफोस्पर्मम मोपने), अर्दू (एलन्थस एक्सल्सा) और कुमट (ऐकेशिया सेनेगल)।

परियोजना 2: राजस्थान के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त शहरी सौन्दर्यपरक वानिकी हेतु उपयुक्त मॉडल का विकास [ए.एफ.आर.आई.–24 / सिल्वि.–4 / 2001–2006]

प्रधान अन्वेषक– श्री एच.सी. चौधरी

स्थिति : यू.आई.टी. से निधीयन पर वर्ष 2001–2002 के दौरान 2.23 किलोमीटर लम्बा प्रायोगिक मार्ग रोपण लगाया गया, जिसे वर्ष के दौरान पोषित कियाः–

- जोधपुर प्रदूषण निवारण ट्रस्ट, जोधपुर से निधीयन पर 1.04 कि.मी. लम्बा प्रायोगिक मार्ग रोपण लगाकर वर्ष के दौरान पोषित किया।
- एशियन विकास बैंक निधीयित राजस्थान शहरी अवसंरचना विकास परियोजना से निधीयन पर 3.50 कि.मी. लम्बा प्रायोगिक मार्ग रोपणों के लिए अग्रिम कार्य शुरू किया गया।
- प्रायोगिक रोपणों के तहत उगाए पादपों के संबंध में वृद्धि और उत्तरजीविता आँकड़े अभिलिखित किए। प्रायोगिक रोपणों के तहत उगाए गए विभिन्न सजावटी वृक्ष प्रजातियों की औसत ऊँचाई और व्यास वृद्धि को निम्न क्रम में प्रेक्षित किया गया। डैल्बर्जिया सिस्सू > ऐजैडिरैक्टा इंडिका > केसिया सियामिया > टैकोमेला अन्डुलाटा > पोगेमिया पिन्नाटा > एलस्टोनिया स्कॉलेरिस > केसिया फिस्टूला > डीलोनिक्स रीगिया।
- यहां तक कि भरपूर सिंचाई अवस्था के तहत डी. रीगिया में सर्द मौसम के दौरान अत्यधिक पश्च क्षय देखा गया, जो प्रजाति को शुष्क क्षेत्र में शहरी सौन्दर्यपरक वानिकी के लिए कम उपयुक्त प्रजाति बनाता है।
- सीवेज पानी की भरपूर सिंचाई के तहत डी. सिस्सू, सी. सियामिया और ए. इंडिका के संबंध में असाधारण रूप से उच्च औसत शीर्ष ऊँचाई देखी गई।

- ब्लू वुल्स द्वारा ए. इंडिका की चराई को नियंत्रित करने के लिए 15 दिनों के औसत अन्तराल पर हलका मोनोक्रोटोफोज घोल का पर्णीय छिड़काव बहुत लागत–प्रभावी घोल पाया गया।
- परियोजना के तहत प्रायोगिक रोपणों को लगाने और पोषित करने में किए गए सच्चे और कठोर कार्य को मान्यता प्रदान करते हुए, परियोजना के कार्यान्वयन से सम्बद्ध शुष्क वन अनुसंधान संस्थान कर्मचारी श्री सादुल राम देवरा, अनुसंधान सहायक-II को स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान स्थानीय जिला प्रशासन द्वारा सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया।

परियोजना 3: राजस्थान की देशज वनस्पति के लिए वृक्ष वाटिका एवं वानस्पतिक उद्यान तैयार करना [ए.एफ.आर.आई.–34 / सिल्वि.–6 / 2002–2006]

प्रधान अन्वेषक–श्री के.के. चौधरी

स्थिति : गड्ढे बनाने का कार्य पूरा किया गया और राजस्थान की 230 देशज वृक्ष प्रजातियों के रोपण का कार्य प्रगति पर है।

- 78 वृक्ष प्रजातियों के पौधों को पहले ही रोपित कर दिया गया है।
- अन्य 20 प्रजातियों के पौधों को पौधशाला में उगाया जा रहा है।
- शेष प्रजातियों के संबंध में बीज संग्रहण का कार्य प्रगति पर है।
- भूमिगत पाइपलाइन नेटवर्क और धूमिका कक्ष का निर्माण प्रगति पर है।

परियोजना 4: राजस्थान के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों व्यापारिक रूप से विदोहन योग्य औषधीय पादपों के लिए सर्वेक्षण एवं वन संवर्धनिक प्रबंध पद्धतियां [ए.एफ.आर.आई.–35 / सिल्वि.–8 / 2002–2005]

प्रधान अन्वेषक–श्री के.के. चौधरी

स्थिति : औषधीय पादपों के साथ सम्बद्ध 15 जिलों की 301 इकाईयों / व्यापारियों का सर्वेक्षण किया और उनसे प्राप्त सूचना को प्रविष्ट और विश्लेषित किया गया।

- जयपुर के औषधीय पादपों की सालाना आवश्यकता अधिकतम थी इसके बाद जोधपुर और अजमेर रहे तथा बांसवाडा की निम्नतम आवश्यकता थी।
- एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस गार्टन, इसके बाद केसिया अंगूस्टिफोलिया वहल. और मैंगिफेरा इंडिका लिन. का अत्यधिक व्यवसाय था। जोधपुर, बीकानेर और कोयम्बटूर से प्राप्त सेन्ना बीज की बीज भार, प्रति किलो बीजों की संख्या और हरे और पीले बीजों की उपस्थिति के लिए अन्तः तुलना की गई। वन संवर्धनिक परीक्षण प्रगति पर हैं।
- 150 औषधीय पादपों के साथ जननद्रव्य बैंक स्थापित किए और गुग्गल पर क्षेत्र परीक्षण किया गया।

परियोजना 5 : कुछ चयनित वृक्ष प्रजातियों की जैव–जलोत्सारण क्षमता से सम्बन्धित विशिष्ट लक्षणों का अध्ययन

प्रधान अन्वेषक–डॉ. एन. बाला

स्थितिः जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार ने रूपये 45.36 लाख के लिए परियोजना स्वीकृत की है। प्रशासनिक अनुमति और रूपये 19.19 लाख मुक्त किए जाने के संबंध में सूचना पत्र संख्या 21 / 73 / 2004– आर व डी / 445–457 दिनांक 4 मार्च, 2004 द्वारा प्राप्त हुई है। धन की प्रतिक्षा की जा रही है।

वर्ष 2003–2004 के दौरान शुरू की गई परियोजनाएं

(बाहर से सहायता प्राप्त)

कोई नहीं

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2003–04 में पूरी की गई परियोजना की संख्या	2003–04 में जारी परियोजना की संख्या	2003–04 में शुरू की गई परियोजना की संख्या
राजस्थान	3	19	3
गुजरात	–	1	1

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तान्तरित

- ए.एफ.आर.आई. पेस्ट को तैयार करने और प्रभावित खिजरी वृक्षों में इसके उपयोग को किसानों और कृषि अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा प्रदर्शित किया गया।
- देशज और विदेशज़ प्रजाति एट्रिप्लेक्स लेन्टिफॉर्मिस और ऐकेशिया एम्लिसेप्स की लवण प्रभावित भूमियों पर वनीकरण प्रौद्योगिकी के साथ जांच की गई। वनीकरण प्रौद्योगिकी के साथ इन प्रजातियों के बीज गुजरात और राजस्थान के राज्य वन विभागों को आपूर्ति की गई।
- टी.आर.सी., गांधीनगर, गुजरात में वी.ए.एम. उत्पादन सुविधा विकसित की गई। कन्सोर्टियम संरोप सहित वी.ए.एम. कवक, यथा– ग्लोमस फेसिकूलेटम, जी. माइक्रोकार्पम और जी. एग्रीगेटम की प्रजातियों के पांच विभिन्न संयोजनों वाले वी.ए.एम. संरोप को तैयार करने के लिए क्षेत्र अधिकारियों के समक्ष प्रदर्शन किया गया।

शिक्षा और प्रशिक्षण

शिक्षा

- श्री सी.जे.एस.के. इमैनुअल, प्रमुख, एफ.जी.टी.बी. प्रभाग, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के पर्यवेक्षण में श्री सोमेन्द्र शर्मा को "सीड सोर्स वेरिएशन एंड रीप्रोडक्टिव बॉयोलॉजी ऑफ ऐजैडिरैक्टा इंडिका ए. जस" पर व.अ.सं. सम–विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी. थीसिस अवार्ड प्रदान किया गया।
- शुष्क वन अनुसंधान संस्थान अधिकारियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया।

प्रशिक्षण आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय

- श्री के.के. चौधरी, भा.व.से. ने इन्स्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट्री, युनिवर्सिटी ऑफ गोर्टिजन (जर्मन) में डी.ए.ए.डी. फेलोशिप के अन्तर्गत दो माह अल्पकालीन अध्ययन और अनुसंधान भ्रमण (15 अगस्त से 14 अक्टूबर, 2003 तक) में भाग लिया और "पौधशाला प्रौद्योगिकी" पर कार्य किया।

राष्ट्रीय

- डॉ. सुनील कुमार ने भारतीय वन प्रबंध संस्थान द्वारा आयोजित भोपाल में 13 से 17 अक्टूबर, 2003 तक "सतत् वन प्रबंध के लिए मापदण्ड एवं निर्देशक" पर उन्नत पाठ्यक्रम में भाग लिया।

संस्थान द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण

- संगोड़ और खेराबाद पंचायत समिति (कोटा), फलोरी (जोधपुर) और इन्दरगढ़ (बूंदी) से क्लस्टर सदस्यों, एस.एच.जी. और किसानों के लिए एकीकृत जलसंभर प्रबन्ध पर 5 दिवसीय और 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- जलसंभर प्रबंध के बहु विद्या विशेष एप्रोच के रूप में पौधशाला और रोपण तकनीकों, जैव उर्वरकों, कृषि वानिकी मॉडलों, नमी और मृदा संरक्षण तकनीकों, उद्यानिकी, पशुपालन और चारागाह प्रबंध पर भी संस्थान और बाहर दोनों से संसाधन व्यक्तियों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

ए.एफ.आर.आई मॉडल पौधशाला में वर्मिकम्पोस्ट पर प्रदर्शन

तकनीकी सत्र के दौरान सहभागी

सी.ई.ओ. जिला परिषद्, जोधपुर सहभागियों को सम्बोधित करते हुए

शैक्षिक भ्रमण

1. 2 अप्रैल, 2003 को अपने अध्ययन दौरे पर वानिकी एवं औद्योनिकी विश्वविद्य बी.एस.सी. (वानिकी) के विद्यार्थी।
2. 19 जुलाई, 2003 को भा.व.से. परिवीक्ष दौरा।

भारतीय वन सेवा परिवीक्षार्थी अपने अध्ययन दौरे पर

3. 29 अगस्त, 2003 को हरियाणा राज्य के फॉरेस्टर और बीट गार्ड क्लास का अध्ययन दौरा।
4. 8 से 10 अक्टूबर, 2003 तक संस्थान में अध्ययन दौरे पर एस.एफ.आर.सी. कोयम्बटूर के रेंज आफीसर प्रशिक्षणार्थी।

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

1. राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरों, नई दिल्ली।
2. टाटा ऊर्जा शोध संस्थान, नई दिल्ली।
3. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली।
4. केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर।
5. राष्ट्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।

6. चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
7. नीम फाउन्डेशन, मुम्बई।

अन्तर्राष्ट्रीय

1. डनिडा फॉरेस्ट सीड सेन्टर, हमलीबेक, डेनमार्क।
2. इन्टरनेशनल नीम नेटवर्क, एफ.ए.ओ., रोम।
3. सी.एस.आई.आर.ओ., आस्ट्रेलिया।

प्रकाशन

पुस्तकों में अध्याय

1. अहमद, एस.आई. और कुमार, शिवेश (2002): रोल ऑफ एन्वायरमैन्टली एसेप्टेबल एन्टोमोपैथोजन्स इन फॉरेस्ट इन्सैक्ट पेस्ट मैनेजमैन्ट। इन मॉडर्न ट्रेन्ड्स इन एन्वायरमेन्टल, बायोलॉजी, सी.बी.एस. पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. त्रिपाठी, वाई.सी.; तिवारी, वी.के.; श्रीवास्तव, के.के. और अहमद, एस.आई. (2002): बायोपेस्टीसाइड्स ऐज ऐन इफैक्टिव टूल फॉर इन्टीग्रेटेड पैस्ट मैनेजमेन्ट। इन फॉरेस्ट कन्जरवेशन एंड मैनेजमेंट ऑफ दी मिलीनियम (सम्पा.– पी. रीथी, बी. डबराल, विनय सिंह और के.के. सूद) पी.पी. 113।
3. श्रीवास्तव, के.के. और त्रिपाठी, वाई.सी. (2004): पोटेन्शियल ऑफ फाइटोकैमिकल इन कन्ट्रोलिंग पैथोजनिक माइकोबायोन्ट्स "फॉरेस्ट कन्जरवेशन एंड मैनेजमेन्ट इन चैलेन्जेज ऑफ दी मिलीनियम" पर पुस्तक में प्रस्तुत अध्याय। (सम्पा.– डी. रेड्डी, बी.पी. डबराल, विनय सिंह और के.के. सूद) पी.पी. : 594–612।

वैज्ञानिक जॉरनल में प्रकाशित शोधपत्र

अन्तर्राष्ट्रीय

1. भाटी, एम. और सिंह, जी. (2003): ग्रोथ एंड मिनरल एकूमूलेशन इन यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस सीडलिंग्स इरिगेटेड वीद मिक्सड़ इंडस्ट्रीयल इफ्लूएन्ट्स। बायो रीसोर्स टैक्नोलॉजी, 88(3): 221–228।
2. सिंह, बिलास और सिंह, जी, (2003): बायोमास पार्टिशिनिंग एंड गैस एक्सचेंज इन डैल्बर्जिया सिस्सू सीडलिंग्स अंडर वाटर स्ट्रैस। फोटोसीन्थेटिका, 41(3): 407–414।
3. सिंह, जी. और भाटी, एम. (2003): मिनरल इलीमेन्ट कम्पोजिशन, ग्रोथ एंड फीजिओलॉजिकल फंक्शन्स इन डैल्बर्जिया सिस्सू सीड़लिग्स इरिगेटेड वीद डिफरेन्ट इफ्लूएन्ट्स। जे. एन्वायरॉन. सा. हैल्थ पार्ट–ए, 38 : 2679–2695।
4. सिंह, जी. और भाटी, एम. (2003): ग्रोथ, बायोमास, प्रोडक्शन एंड न्यूट्रिएन्ट्स कम्पोजिशन ऑफ यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस सीडलिंग्स इरिगेटेड वीद मूनिसिपल एफ्लूएन्ट इन लोमी सैण्ड स्वॉयल ऑफ इंडियन डीजर्ट। जे. प्लान्ट न्यूट्रिशन, 26: 2469–2488।
5. सिंह, जी.; बाला, एन.; राठौड़, टी.आर. और चौहान, एस. (2003): इफैक्ट ऑफ एडल्ट नेबर्स ऑन रीजनरेशन एंड परफॉरमेन्स ऑफ सरफेस वेजीटेशन इन शिटिंग ड्यून ऑफ इंडियन डीजर्ट फॉर दी कन्ट्रोल ऑफ सैण्ड ड्राइट। एन्वायरमेन्टल कन्जरवेशन, 30(4): 353–363।
6. सिंह, जी. (2004): इन्फ्लूएन्स ऑफ स्वॉयल म्वॉइस्चर एंड न्यूट्रिएन्ट ग्रेडिएन्ट ऑन ग्रोथ एंड बायोमास प्रोडक्शन ऑफ कैलिगोनम पॉलीगोनॉइड्स इन इंडियन डीजर्ट ऐफेक्टेड बाई सरफेस वेजीटेशन। जे. एरिड एन्वायरमेन्ट, 56(3): 541–558।

राष्ट्रीय

1. सिंह, जी.; बाला, एन.; कुप्पूस्वामी, वी. और राठौड़, टी.आर. (2003): एडाप्टेबिलिटी एंड प्रोडक्टिविटी ऑफ केसिया अंगुस्टिफोलिया इन सैण्डी स्वॉयल ऑफ इंडियन डीजर्ट। इंडियन फॉरेस्टर, 129 (2): 213–223।

2. बाला, एन.; सिंह, जी.; कुमार, पी. और सिन्हा, ऐ.के. (2003): रोल ऑफ फॉरेस्ट इन कार्बन सीक्वीस्ट्रेशन, इंडियन फॉरेस्टर, 129: 799–806।

3. सिंह, जी.; बाला, एन.; चौधरी, के.के. और मीणा, आर,एल. (2003): कार्बन सीक्वीस्ट्रेशन पोटेन्शियल ऑफ कॉमन एक्सेस रीसोर्सेज इन एरिड एण्ड सेमि–एरिड रीजन्स ऑफ नार्थ–वेस्टर्न इंडिया, इंडियन फॉरेस्टर, 129 : 859–864।

4. कुमार, पी.; सिंह, जी. और बोहरा, एन.के. (2003): सोसियो–इकोनॉमिक स्टेट्स ए टूल टू ऐसेस दी इम्पैक्ट ऑफ फॉरेस्ट्री प्रोग्राम्स। वेस्टलैण्ड न्यूज, 18(4): 31–33।

5. सिंह, जी. (2003): सोइंग सीड्सः सीड जर्मिनेशन एंड ग्रोथ ऑफ कोलोफोस्परमम मोपेनी ड्यूरिंग ड्राट। वेस्टलैण्ड न्यूज, 19(1): 48–50।

6. कुमार, पी.; सिंह, जी.; बाला, एन. और बोहरा, एन.के. (2003): इथनोबॉटनिकल स्टड़ीज ऑफ फॉरेस्ट ऑफ बनासकांठा और साबरकांठा डिस्ट्रिक्ट ऑफ गुजरात : ए केश स्टडी ऑफ सम ट्राइबल विलेजेज़। इंडियन जे. इकोप्लानिंग, 7(2): 303–306।

7. बाला, एन.; सिंह, जी. और बोरा, एन.के. (2003): इफैक्ट ऑफ इरिगेशन ऑन ग्रोथ एंड परफॉरर्मेन्स ऑफ थ्री डिफरेन्ट ट्री स्पीसिंज़ इन इंडियन एरिड जोन। एनल्स ऑफ एरिड जोन, 42: 61–67।

8. सिंह, जी. (2003): विन्डब्लोन वन्डर्स : बायो प्रोडक्टिविटी एंड इकोनॉमिक रीटर्न फ्राम सैण्ड डयून स्टैबिलाइजेशन वेस्टलैण्ड न्यूज, 19(2): 32–35।

9. सिंह, बी. और सिंह, जी. (2003): इफैक्ट ऑफ वाटर, एवेलेबिलिटी एंड फॉस्फोरस एप्लिकेशन ऑन बायोमास एम्यूमूलेशन एंड माइक्रोन्यूट्रिएन्ट्स कन्सन्ट्रेशन इन डैल्बर्जिया सिस्सू सीडलिंग्स। जे. इंडियन सोस. स्वॉयल साइंस, 51(3): 316–319।

10. शर्मा, मीता और अहमद, एस.आई (2003): रीलेटिव टॉक्सिसिटी ऑफ डिफरेन्ट इन्सेक्टिसाइड्स अगेंस्ट मारवाड टीक डीफॉलिएटर, पेटिएलस टेकोमीला पजनी, कुमार एंड रोज़ (कोलीप्टेरा : कूर्कूलिओनिडा) एन.फॉर 11(1):127–132।

11. मिश्रा, डी.के. और सिंह, वेद पाल (2003): स्टैण्डडाईजेशन ऑफ सीड वेट रीप्लिकेशन्स ऑफ ट्री स्पीसिज़ ग्रोइंग इन एरिड एण्ड सेमि–एरिड जोन। माई फॉरेस्ट 39: 287–289।

12. प्रीलिमिनेरी ग्रोथ मॉडल्स फॉर प्रोसोपिस सिनरेरिया (एल) ड्रूस प्लान्टेशन्स इन दी हॉट एरिड रीजन ऑफ इंडिया। वी.पी. तिवारी और के.वी. गेंडो, फॉरेस्ट्स, ट्रीज एंड लाइवलीहुड्स, 13(4): 2003; 361–373।

13. स्पेसिंग इफैक्ट आन दी ग्रोथ ऑफ एरिगेटेड प्लान्टेशन्स इन हॉट डीजर्ट, वी.पी. तिवारी और वी.एस. किशन कुमार, इंडियन फॉरेस्टर, 129(3); 2003 349–356।

तैयार की गई वैज्ञानिक रिपोर्ट

- अहमद, एस.आई. और श्रीवास्तव, के.के. (2003): ए रिपोर्ट ऑन दी साइंटिफिक एप्रोच टू स्टडी दी कॉजेज ऑफ मॉर्टेलिटी ऑफ प्रोसोपिस सिनरेरिया (एल.) ड्रूस (खिजरी) इन वेस्टर्न राजस्थान। रिपोर्ट पर्यावरण में प्रकाशित (2003)।

कार्यशालाओं की कार्यवाही

- "डवलपमेन्ट ऑफ सूटेबल स्ट्रैटज़ी फॉर रीहेबिलिटेशन ऑफ ओरन्स एंड गौचर्स इन राजस्थान" यूनिसेफ, जयपुर द्वारा प्रायोजित।
- "डाटा एनालीसिस ऑफ दी इन्टरनेशनल नीम नेटवर्क" एफ.ए.ओ., रोम द्वारा प्रायोजित।

सेमिनारों / संगोष्ठियों / कार्यशालाओं में प्रस्तुत शोधपत्र

1. तिवारी, वी.पी. – "सम इर्म्पोटेन्ट वाइल्ड प्लान्ट्स यील्डिंग अल्टरनेटिव फूड्स न्यूट्रिशनल सीक्योरिटी इन एरिड रीजन ऑफ राजस्थान" यह शोधपत्र 18 और 19 सितम्बर, 2003

को सी.एस.के.एच.पी. कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर में सम्पन्न "खाद्य एवं पोषणीक सुरक्षा : प्रौद्योगिकीय नवीनताएं एवं आनुवंशिकीय विकल्प" संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया।

2. थंगामणी, डी.; वर्मा, नीलम और श्रीवास्तव, के.के (2003): "प्योरिफिकेशन ऑफ एन्टिफंगल प्रोटिन्स फ्रॉम ट्राइगोनीला फोइनम ग्रेसीयम अगेंस्ट चारकोल रॉट काजिंग आर्गेनिज्म मैक्रोफोमिना फेजिओलिना"। 8 से 10 अक्टूबर तक राजस्थान कृषि महाविद्यालय, जयपुर में इंडियन सोसाइटी ऑफ माइकोलॉजी एंड प्लान्ट पैथोलॉजी में किए गए 25वें सालाना सम्मेलन एवं संगोष्ठी में यह शोधपत्र प्रस्तुत किया और इसका सार प्रकाशित हुआ।

3. थंगामणी, डी.; श्रीवास्तव, के.के. और वर्मा, नीलम (2003): "चारकोल रूट रॉट– ए सीरियस डिजीज ऑफ नीम"। 8 से 10 अक्टूबर तक राजस्थान कृषि महाविद्यालय, जयपुर में इंडियन सोसाइटी ऑफ माइकोलॉजी एंड प्लान्ट पैथोलॉजी में किए गए 25वें सालाना सम्मेलन एवं संगोष्ठी में यह शोधपत्र प्रस्तुत किया और इसका सार प्रकाशित हुआ।

4. थंगामणी, डी.; श्रीवास्तव, के.के. और वर्मा, नीलम (2004): नोवल एन्टिफंगल प्रोटीन फ्रॉम स्टेफीलोकोकस यूरीयस अगेंस्ट मैक्रोफोमिना फेजिओलिना। 9 और 10 जनवरी को सूक्ष्म जैविक विभाग, करपागम कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा आयोजित "मानव–जाति के लिए जीवाणु" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में यह शोधपत्र प्रस्तुत किया और सार प्रकाशित हुआ।

5. थंगामणी, डी.; श्रीवास्तव, के.के. और वर्मा, नीलम (2004): आइडेन्टिफिकेशन एंड प्योरिफिकेशन ऑफ एन्टिफंगल प्रोटीन्स फ्रॉम ट्राइगोनीला फोएनम ग्रेसीयम अगेंस्ट दी चारकोल रूट कॉजिंग आर्गेनिज्म मैक्रोफोमिना फेजिआलिना। 9 और 10 जनवरी को सूक्ष्म जैविक विभाग, करपागम कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा आयोजित "मानव–जाति के लिए जीवाणु" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में यह शोधपत्र प्रस्तुत किया और सार प्रकाशित हुआ।

6. श्रीवास्तव, के.के.; थंगामणी. डी. और वर्मा, नीलम (2004): एन्टागोनिस्टिक एक्टिविटी ऑफ ए.एम.– फंगी अगेंस्ट फ्यूजेरियम विल्ट डिजीज ऑफ रोहिड़ा (टैकोमीला अन्डुलाटा एस.एम. सीम.)। 9 और 10 जनवरी को सूक्ष्म जैविक विभाग, करपागम कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा आयोजित "मानव–जाति के लिए जीवाणु" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में यह शोधपत्र प्रस्तुत किया और सार प्रकाशित हुआ।

7. जैन, एस.एच.; आर्या, रंजन और चौधरी, के.के. : "वुड क्राफ्ट इन्डस्ट्री इन राजस्थान"। 20 और 21 अक्टूबर, 2003 को बंगलौर में "भारत में काष्ठ परिरक्षण : चुनौतियां, सुअवसर और रणनीतियां" पर कार्यशाला में प्रस्तुत।

8. तिवारी, वी.पी. : "डीसर्टिफिकेशन एंड इट्स कंट्रोल थ्रो एफोरेस्टेशन एक्टिविटिज़ फोर इन्क्रीजिंग प्रोडक्टिविटी"। जोधपुर में 9 से 14 नवम्बर, 2003 तक "रेगिस्तान प्रौद्योगिकी" पर सातवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

9. मीना, आर.एल. और सिंह, जी : "इन्टीग्रेटेड इकोसीस्टम एप्रोच फॉर मैनेजमेन्ट ऑफ डीग्रेडेड एरिड एंड सेमि–एरिड़ एरीयाज़ ऑफ नार्थ–वेस्टर्न इंडिया" जोधपुर में 9 से 14 नवम्बर, 2003 तक "रेगिस्तान प्रौद्योगिकी" पर सातवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत।

10. जैन, एस.एच; कुमार, हेमंत; आर्या, रंजना और चौधरी, के.के. (2003): वुडक्राफ्ट इन्डस्ट्री इन राजस्थान– ए चैलेन्जिंग ऑपोर्चूनिटी फॉर वुड प्रीजरवेशन। यह शोधपत्र काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में 20 और 21 अक्टूबर, 2003 को "भारत में काष्ठ परिरक्षण:

चुनौतियां, सुअवसर और रणनीतियां" पर कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया।

11. जैन, एस.एच.; आर्या, रंजना; कुमार, हेमन्त और चौधरी, के.के. (2004): रेशनल यूटिलाइजेशन ऑफ प्लान्टेशन ग्रोन लैसर नोन टिम्बर स्पीसिज़ इन एरिड रीजन। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 8 से 10 मार्च, 2004 तक "अल्प ज्ञात वृक्ष प्रजातियों के संरक्षण एवं सतत् उपयोग" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भेजा।

12. राठौड़, माला; आर्या, आर.; मीना, राजेन्द्र और चौधरी, के.के. (2004): पोटेन्शियल ऑफ सम लैसर नोन ऑयल सीड ट्री स्पीसिज़ फ्राम इंडियन एरिड जोन। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में 8 से 10 मार्च, 2004 तक "अल्प ज्ञात वृक्ष प्रजातियों के संरक्षण एवं सतत् उपयोग" पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भेजा।

परामर्श

ग्रामीण विकास मंत्रालय, भूमि संसाधन विभाग, भारत सरकार, और ग्रामीण विकास विभाग, भूमि विकास सैल, राजस्थान सरकार ने निम्न परियोजनाओं के मूल्यांकन का कार्य सौंपा है:–

1. राजस्थान में रावतसर, हनुमानगढ़ जिले में जलाक्रान्त क्षेत्र की बंजरभूमि का सुधार।
2. बाड़मेर, जैसलमेर, सिरोही, झूंझूनू, सिकर, पाली और नागौर जिलों में ग्रामीण विकास विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा प्रायोजित डी.डी.पी. के तहत रेगिस्तानीकरण को रोकने के कार्यों का मूल्यांकन।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनी

आयोजित

1. 23 और 24 दिसम्बर, 2003 को सम्पर्क और अनुसंधान सलाहाकार समूह की बैठक।
2. 11 से 17 सितम्बर, 2003 तक हिन्दी सप्ताह। हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में श्री सन्तोख सिंह, डिविजनल रेलवे मैनेजर, जोधपुर द्वारा संस्थान के त्रैमासिक न्यूज लैटर "ए.एफ.आर.आई. दर्पण" का विमोचन किया गया।

श्री संतोख सिंह द्वारा संस्थान के न्यूजलेटर का विमोचन

3. 18 जुलाई, 2003 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में मरू गौचर टास्क फोर्स की बैठक हुई।

मरू गौचर टास्क फोर्स की बैठक

सहभागिता

1. 20 से 22 अप्रैल, 2003 तक जयपुर में "औषधीय पादपों का संरक्षण एवं प्रवर्धन" पर कार्यशाला।
2. जयपुर में 5 और 6 सितम्बर को आई.आई.एम.एम., भोपाल द्वारा आयोजित 'सतत् वन प्रबंध के लिए मापदण्ड एवं निर्देशन' पर कार्यशाला।

3. आर.ए.यू. जयपुर में 8 से 10 अक्टूबर, 2003 तक "पादप रोग प्रबंध के लिए वर्तमान प्रौद्योगिकियां और भावी रणनीतियों" पर कार्यशाला।

4. जे.एन.वी. विश्वविद्यालय, जोधपुर में 11 अक्टूबर, 2003 को "अरावली खनन और वन" पर कार्यशाला।

5. 20 और 21 अक्टूबर, 2003 को बंगलौर में "भारत में काष्ठ परिरक्षण : चुनौतियां, सुअवसर और रणनीतियां" पर कार्यशाला।

6. जोधपुर में 9 से 14 नवम्बर, 2003 तक "रेगिस्तान प्रौद्योगिकी" पर सातवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन।

7. श्री बलबीर सिंह, भा.व.से., प्रमुख, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग ने 1 से 3 मार्च, 2004 तक एन.आई.आर.डी., हैदराबाद में हस्तान्रण एवं समुदाय आधारित वन प्रबंध पर तीन दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

8. 8 से 10 मार्च, 2004 तक वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में "अल्प ज्ञात वृक्ष प्रजातियों के संरक्षण एवं सतत् उपयोग" पर राष्ट्रीय कार्यशाला।

9. अक्टूबर, 2003 को स्वदेशी मेला और फरवरी 2004 को हस्तशिल्प मेले में संस्थान ने भाग लिया और अनुसंधान उपलब्धियों एवं प्रौद्योगिकी के हस्तान्तरण का प्रदर्शन किया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. 28 अगस्त, 2003 को माननीय वन एवं पर्यावरण मंत्री, राजस्थान और प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान।

2. 22 अक्टूबर, 2003 को प्रोफेसर कौस सीलैण्ड, फॉरेस्ट पॉलिटिक एंड फॉरेस्ट इकोनॉमिक, स्वीस फेडरल इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, जूरिक।

3. 10 दिसम्बर, 2003 को श्री जोगेश चौ. बर्मन, माननीय प्रभारी, मंत्री, वन विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान द्वारा तुलेसर चारण वन संवर्धन चरागाह मॉडल विकसित किया जा रहा है।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. औषधीय जननद्रव्य बैंक का उद्‌घाटन करते हुए

4. श्री जे. हरी नारायण, भा.प्र.से., अति. सचिव (भूमि सुधार) ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने 30 मार्च, 2004 को संस्थान का भ्रमण किया और निदेशक, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ने संस्थान के अनुसंधान कार्यकलापों की जानकारी दी, इसके बाद औषधीय जननद्रव्य बैंक में भ्रमण कराया गया।

श्री जे. हरि नारायण, भा.प्र.से., अतिरिक्त सचिव, ग्रामीण विकास मंत्रालय औषधीय जननद्रव्य बैंक का निरीक्षण करते हुए

विविध

1. 15 अगस्त, 2003 को खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यकलापों का आयोजन किया।
2. 31 अक्टूबर से 6 नवम्बर, 2003 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह और 19 से 25 नवम्बर, 2003 तक कौमी एकता सप्ताह मनाया गया।
3. 28 फरवरी, 2004 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया, जिसमें शुष्क वन अनुसंधान संस्थान परिसर के बच्चों के बीच पर्यावरण, वानिकी और वन्यप्राणि पर भाषण एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।